नीतिवचन की पुस्तक का लेखक कौन है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

प्रश्न: नीतिवचन की पुस्तक किसने लिखी?

सुलैमान, जो दाऊद का पुत्र था, को आमतौर पर नीतिवचन की पुस्तक का लेखक माना जाता है, क्योंकि पुस्तक की शुरुआत में वह स्वयं इसका परिचय देता है:

नीतिवचन 1:1 (ERV-HI)
“इस्राएल के राजा दाऊद के पुत्र सुलैमान के नीतिवचन।”

यह पुस्तक मसीह के जन्म से लगभग 900 वर्ष पहले लिखी गई मानी जाती है और यह ज्ञान से भरी हुई साहित्यिक रचनाओं में से एक है। इसमें नैतिक सिद्धांतों, आत्मिक मार्गदर्शन और दैनिक जीवन के लिए व्यावहारिक सलाह की भरमार है। इसमें प्रकृति के उदाहरणों का भी भरपूर उपयोग है, जो यह दर्शाते हैं कि परमेश्वर की सृष्टि में उसकी बुद्धि कैसे प्रकट होती है। नीतिवचन बाइबिल की ‘ज्ञान साहित्य’ की श्रेणी में आता है, जिसमें अय्यूब, सभोपदेशक और श्रेष्ठगीत की पुस्तकें भी शामिल हैं।

नीतिवचन की पुस्तक के खंड:

नीतिवचन 1–22:16: यह भाग मुख्यतः सुलैमान द्वारा लिखा गया माना जाता है और यह धार्मिक जीवन के लिए ज्ञान, नैतिकता और व्यावहारिक शिक्षाओं की नींव रखता है।

नीतिवचन की पुस्तक का लेखक कौन है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

नीतिवचन 22:17–24:34: इस खंड को “तीसरी पुस्तक” कहा जाता है। इसे संभवतः अन्य ज्ञानी व्यक्तियों ने लिखा था, लेकिन इसे सुलैमान ने एकत्र किया। इसमें जीवन की सच्चाइयों पर आधारित उपदेश और ज्ञान का चिंतन है।

नीतिवचन 25–29: इस भाग को सुलैमान ने लिखा, लेकिन इसे बाद में यहूदा के राजा हिजकिय्याह के सेवकों ने लिपिबद्ध किया (लगभग 700 ईसा पूर्व)। यह बात बाइबिल स्वयं स्वीकार करती है:

नीतिवचन 25:1 (ERV-HI)

“ये भी सुलैमान के अन्य नीतिवचन हैं, जिन्हें यहूदा के राजा

हिजकिय्याह के कर्मचारियों ने लिखा।”

नीतिवचन 30: यह अध्याय, जिसे “पाँचवी पुस्तक” भी कहा जाता है, याके के पुत्र आगूर द्वारा लिखा गया था। इसमें जीवन और परमेश्वर की सृष्टि से जुड़े रहस्यों पर विचार किया गया है।

नीतिवचन 31: अंतिम अध्याय पारंपरिक रूप से राजा लेमूएल को सौंपा गया है। यह उसकी माता द्वारा उसे दी गई सीख पर आधारित है। यह अध्याय एक गुणी स्त्री की सुंदर छवि प्रस्तुत करता है — जो परिश्रमी, बुद्धिमती और परमेश्वर से डरने वाली है।

कुछ विद्वान मानते हैं कि आगूर और लेमूएल सुलैमान के ही अन्य नाम हो सकते हैं, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि इस पुस्तक की अधिकांश बुद्धिमत्ता का स्रोत वही हैं। फिर भी, पुस्तक अन्य ज्ञानी जनों के योगदान को भी मान्यता देती है।

नीतिवचन की पूरी पुस्तक को परमेश्वर का एक दिव्य प्रशिक्षण-

नीतिवचन की पुस्तक का लेखक कौन है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

पुस्तक माना जाता है, जो उसके लोगों को धार्मिकता, ज्ञान और शांति से जीवन जीने में मार्गदर्शन देती है। यह परमेश्वर की उस बुद्धि को उजागर करती है, जो हमारे नैतिक चरित्र, व्यवहार और संसार की समझ को आकार देती है।

नीतिवचन से कुछ प्रमुख आत्मिक शिक्षाएँ:

नीतिवचन 21:17 (ERV-HI)
“जो व्यक्ति सुख का प्रेमी है वह निर्धन होगा।
जो व्यक्ति दाखमधु और इत्र से प्रेम करता है वह धनी नहीं रहेगा।”

यह पद संयम के महत्व और भोग-विलास की अधिकता के खतरे को सिखाता है। बाइबिल अक्सर उस जीवन से सावधान करती है जो केवल सुख की खोज में हो। यीशु ने स्वयं कहा:

मत्ती 5:6 (ERV-HI)
“धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं,
क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।”

नीतिवचन की पुस्तक का लेखक कौन है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

नीतिवचन 10:5 (ERV-HI)
“जो गरमी के समय फसल एकत्र करता है, वह समझदार पुत्र है, किन्तु जो कटाई के समय सोता रहता है, वह अपमानजनक पुत्र है।”

यह पद समय पर काम करने और मेहनती बनने की शिक्षा देता है। यह प्रेरित पौलुस की उस बात को भी दर्शाता है:

2 थिस्सलुनीकियों 3:10 (ERV-HI)
“जो काम नहीं करता, उसे खाने का अधिकार भी नहीं।”

नीतिवचन 25:13 (ERV-HI)
“कटाई के समय में बर्फ जैसा ठंडा पानी जिस प्रकार भेजने वाले के लिये एक सच्चा दूत सुखद होता है,
वह अपने स्वामी की आत्मा को ताज़गी प्रदान करता है।”

नीतिवचन की पुस्तक का लेखक कौन है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

यह पद एक सच्चे, वफादार संदेशवाहक की प्रशंसा करता है। यीशु ने भी अपने चेलों से यही अपेक्षा की:

मत्ती 25:21 (ERV-HI)
“शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य सेवक!
थोड़े में विश्वासयोग्य रहा, बहुत पर तुझे अधिकार दूँगा।”

नीतिवचन 5:15–18 (ERV-HI)
“अपने ही कुएँ से जल पी,
अपने ही सोते से बहता हुआ जल।
क्या तेरा सोता सड़कों पर और तेरे जल के सोते चौकों में बहने दें?
वे केवल तेरे ही हों,
और परायों के साथ साझा न हो।
तेरा सोता धन्य हो,
और अपनी जवानी की पत्नी से तू प्रसन्न रह।”

यह पद विवाह की पवित्रता और विश्वासयोग्यता पर बल देता है। यह दिखाता है कि बाइबिल के अनुसार यौन संबंध केवल पति-पत्नी के बीच

नीतिवचन की पुस्तक का लेखक कौन है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

की एक पवित्र देन है:

इब्रानियों 13:4 (ERV-HI)
“विवाह सब में आदर की बात मानी जाए
और विवाह-बिस्तर अपवित्र न हो।”

नीतिवचन 21:1 (ERV-HI)
“राजा का मन यहोवा के हाथ में जलधारा के समान है,
वह उसे जिधर चाहे, उधर फेर देता है।”

यह पद परमेश्वर की संप्रभुता पर बल देता है — कि राजा और शासक भी उसकी इच्छा के अधीन हैं। जैसा कि दानिय्येल 2:21 कहता है:

दानिय्येल 2:21 (ERV-HI)
“वह काल और समय को बदलता है,
वह राजाओं को हटाता और स्थापित करता है।”

नीतिवचन की पुस्तक का लेखक कौन है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

इसलिए मसीही विश्वासियों को परमेश्वर की सर्वोच्च सत्ता पर भरोसा करना चाहिए और अपने नेताओं के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

निष्कर्ष:

नीतिवचन की पुस्तक हमें वह अनन्त ज्ञान देती है, जो हमारे जीवन, रिश्तों और आत्मिक यात्रा में दिशा देता है। यह हमें धार्मिकता, विवेक और समझ की खोज करने को कहती है और मूर्खता, पाप तथा भोग-विलास से सावधान करती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह सिखाई जाती है:

नीतिवचन 1:7 (ERV-HI)
“यहोवा का भय ज्ञान का प्रारंभ है,
पर मूर्ख लोग बुद्धि और अनुशासन से घृणा करते हैं।”

और जैसा याकूब कहता है:

याकूब 1:5 (ERV-HI)
“यदि तुममें से किसी को बुद्धि की कमी हो, तो वह परमेश्वर से माँगे,

नीतिवचन की पुस्तक का लेखक कौन है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 8

जो सबको उदारता से देता है और तिरस्कार नहीं करता —
और उसे बुद्धि दी जाएगी।”

प्रभु की यह बुद्धि आपके विश्वास के मार्गदर्शन में सहायक हो।

आप पर परमेश्वर की आशीष बनी रहे।

अगर आप चाहें तो मैं इस अनुवाद को किसी विशेष हिंदी बाइबल संस्करण के अनुसार समायोजित कर सकता हूँ — जैसे कैथोलिक बाइबिल (TCI) या रोमन कैथोलिक यूनियन वर्जन, अगर वह आपके समुदाय या उपयोग के लिए उपयुक्त हो। बताइए, क्या आपको यह चाहिए?

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp